प्रातःक्लास ओमशान्ति *-:: शिवबाबा याद है?:: 30-1-68

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। बच्चों को पहले2 तो बाप का परिचय मिला है। छोटा बच्चा पैदा होता है तो पहले2 उनको मां-बाप का परिचय मिलता है। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हैं जिनको रचता बाप का परिचय मिला है। यह भी बच्चे जानते हैं ऊंचते ऊंचबाप ही है, उनकी ही महिमा बतानी है। महिमा गाते भी हैं शिवाय नमः। ब्रह्मायनमः, विष्णुवाय नमः शोभता नहीं है। शिवाय नमः शोभता है। ब्रह्मा-विष्णु के लिए फिर कहेंगे ब्रह्मा देवताय नमः, विष्णु देवतायनमः। देवता से अक्षर शोभता है। देवता कहना पड़े। ऊंच ते ऊंच है भगवान। प्रदर्शनी आद में जब कोई आते हैं तो पहले2 बाप की महिमा जरूर बतानी है। वह सुप्रीम वा परम बाप है। बच्चे भूल जाते हैं उस समय याद नहीं पड़ता है बाप की महिमा कैसे सुनावें। पहले तो यह समझाना वह सुप्रीम बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी हैं। तीनों को याद करना पड़े। यूं याद तो शिव बाबा को ही करना है तीनों रूपों में। यह तो पक्का करना पड़े पहले2 बाप की महिमा करनी है। जरूर तुम जानते हो तब तो महिमा करते हो। ऊंच ते ऊंच भगवान को फिर ठिकरे-भितर में ठोक देते हैं। मनुष्य में भी नहीं कह सकते। सदैव तो मनुष्य तन में रहते नहीं हैं। वह तो जरूर लोन लेते हैं। कोई भी आत्मा किसके शरीर का आधार नहीं लेती है। यह खुद कहते हैं मैं इनका आधार लेता हूं। तो पहले2 मुख्य बात पक्की करनी है। बाप हैं ही दूध। वही सत्य नारायण की कथा सुनाते हैं। नर से नारायण दूध बाप ही बनाते हैं। इन ल0ना0 का राज्य था ना। वह बने कैसे, कब बनाया, कब कथासुनाई, कब राजयोग सिखाया यह तुम अभी समझते हो। और सभी योग होते हैं मनुष्य के मनुष्य साथ। ऐसा होता नहीं जो मनुष्य का योग निराकार साथ हो। वह भी समझ से हो। आजकल तो भल शिव साथ योग लगाते हैं, पूजा करते हैं परन्तु उनको जानते कोई भी नहीं हैं। समझते कुछ भी नहीं। यह भी समझते हैं प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर साकारी सृष्टि पर ही होगा। मुंझे हुये हैं। समझते हैं प्रजापिता ब्रह्मा तो पहले2 सतयुग में होना चाहिए। अगर सतयुग में प्रजापिता ब्रह्मा हो तो फिर सूक्ष्मवतन क्यों दिखाया है। अर्थ ही नहीं समझते। वह है कर्मबन्धन में, वह हैं कर्मातीत। यह ज्ञान कोई में नहीं है। ज्ञानदेने वाला तो एक ही बाप है। वह आकर तुमको ज्ञानदेवे तब तुम दूसरों कोसुनाओ। ज्ञान हैं ही नहीं तो दूसरों को सुनावेंगे कैसे। बाप का परिचय देना है बहुत सहज। अंक पर ही समझाना है। यह सभी आत्माओं का बेहद का बाप है। किसको परिचय देने में किसको तकलीफ नहीं है। बहुत सिम्पुल है। परन्तु निश्चय नहीं तो किसको समझाये नहीं सकते हैं। जैसे अज्ञानी मनुष्य हैं वैसे यह भी अज्ञानियों के लाईन में आते हैं। ज्ञान नहीं देते तो गोया अज्ञानी हैं। ज्ञान होगा ही देहीअभिमानी में। ज्ञान नहीं तो भक्ति है वा देहाभिमान है। हम आत्मा हैं, हमारा बाप परमपिता परमात्मा है, वही टीचर गुरु है। प्रजापिता ब्रह्मा भी तो हैं ना। सूक्ष्मवतन में कहां से आया। बाप ने प्रजापिता ब्रह्मा का भी आक्युपेशन बताया है। विष्णु का भी आक्युपेशन बताया है। शंकर के लिए तो बताया है उनका पार्ट ही नहीं है। उन्हों ने तो शिव के साथ शंकर को मिला कर एक ही कर दिया है। समझते हैं शंकर विनाश करते हैं। यह भी बात बनाये दी है। बाकी ऐसे है नहीं कि शंकर के आंख खोलने से सृष्टि भसम हो जावेगी। यह तो बम्स हैं। नेचरल कैलेमिटीज़ होती है। विनाश करना तो बहुत छी2 बात है। फिर शंकर जैसे आसुरी सम्प्रदाय हो जावे। देवतायें फिर आसुरी सम्प्रदाय कैसे हो सकते। फिर शिव-शंकर महादेव कह देते हैं। यह त्रिमूर्ति आद के चित्र यथार्थ रीति हैं नहीं। यह तो सब अर्थ रहित चित्र हैं। विष्णु भी सूक्ष्मवतन में जेवर आद वाला कैसे हो सकता है। यह भी ठीक है नहीं है। तुम कहेंगे यह सभी भक्ति मार्ग के शास्त्र चित्र आद हैं। वहां तो ऐसे कोई बात हो न सके। प्रजापिता ब्रह्मा भी देहधारी है। कितने ढेर बच्चे हैं। तो यह चित्र आद सब भक्ति मार्ग के पूजा आद लिए हैं। प्रजापिता ब्रह्मा वहां कैसे हो सकता है। बाप ने समझाया हैं यह व्यक्त, वह अव्यक्त। जब अव्यक्त बनते हैं

तो सूक्ष्मवतन फरिश्ता हो जाते हैं। मूलवतन, सूक्ष्मवतन है तो सही ना। सूक्ष्मवतन में जाते हैं ना। तो यह चि आद कोई यर्थात रीति है नहीं। बाप बैठ अर्थ समझाते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा जो मनुष्य था वही फिर फरिश्ता बनता है। और फिर राजाई का भी इसमें दिखाया है, फिर यह राज्य करेंगे। सूक्ष्मवतन के यह चित्र न हो तो भी समझाने में मुश्किलात हो जाये। वास्तव में विष्णु का चतुर्भुज रूप भी नहीं है। वह सभी हैं भक्ति मार्ग के। यहां बाप समझाते हैं पतित से पावन बनना है। सूक्ष्मवतन की बात ही नहीं ठहरती। आत्मा को प्युर बनना है। प्युर बन कर चले जायेंगे अपने धाम। आत्मायें तो निराकारी दुनिया में रहती है। साकारी है यहां। बाकी सूक्ष्मवतन की कोई मुख्य कहानी है नहीं। सूक्ष्मवतन का राज़ भी अभी बाप समझाते हैं। मूलवतन, फिर सूक्ष्मवतन फिर है स्थूल वतन। तो पहले2 जब कोई भी आते हैं तो बाप का परिचय देना है। वह बाप है। भक्ति मार्ग में भी बाबा बाबा, हे भगवान कहते हैं। सिर्फ जानते नहीं हैं। हमेशा कहते हैं शिव परमात्माय न ः। शिव देवता कब नहीं क हैंगे नहीं। ब्रह्मा देवतायनमः कहेंगे। शिव को परमात्मा ही कहते हैं। परमपिता परमात्मा भी कहते हैं। फिर उनको सर्वव्यापी थोड़े ही कहा जाता है। पतितों को पावन बनाने का कर्तव्य करना है। तो क्या भितर-ठिकर में जाये करेंगे। इसको घोर-अंधियारा कहा जाता है। यह भी ड्रामा में नूंध है। मनुष्य खुद पत्थर बुधि हैं तो भगवान को भी ठिकर-भिकर में ले गये हैं। कुछ भी समझते नहीं। बाप आकर समझाते हैं यदा यदा ही.... भारत की ही बात है। शास्त्रों में तो संस्कृत में लिख दिया है। बाप आकर इनका अर्थ समझाते हैं। यदा यदा.. किसकी ग्लानी? वह लोग श्लोक सुनाकर फिर क्या अर्थ सुनाते हैं यह भी तुम बच्चों को देखना चाहिए। वहां जाकर बोलना चाहिए हम इनका अर्थ नहीं समझते हैं। फट से सुनावेंगे। ऐसे थोड़े ही समझेंगे यह ब्रह्माकुमारियां हैं। कर के सफेद ड्रेस है, परन्तु तुम्हारे पर कोई ब्रह्माकुमारी का छापा थोड़े ही है। पुरुष भी कोई जाये पूछे वह तो झट सुनावेंगे। वह लोग क्या अर्थ करते हैं वह मालूम पड़ने से फिर बाबा इसका अर्थ भी समझावेंगे। बाबा को समाचार देना चाहिए। परन्तु ऐसा कोई बच्चा है नहीं। यह चिनमयानन्द आद जाते हैं तो सभी तरफ ना। कहां भी जाये सुन आना चाहिए। खुद पूछ भी सकते हैं इसका अर्थ तो समझा ही नहीं। देखो वह क्या सुनाते हैं। बाकी इतने सब चित्र तो डिटेल में समझाने की है। कितना अथाह ज्ञान सुनाते हैं। सागर कर के ग्रंथ बनाओ तभी भी अन्त नहीं। और फिर रेफन्ड की भी बात सुनाई। सिर्फ बाप का परिचय देना है। वही पतित-पावन वेहद का बाप है। वह बाप है स्वर्ग का रचता। हम उनके बच्चे ब्रदर्स हैं। तो हमको भी जरूर स्वर्ग का राज्य होना चाहिए ना। परन्तु सभी को तो मिल न सके। बाप आते ही हैं भारत में। भारतवासी ही स्वर्ग वासी बनते हैं। दूसरे तो आते ही हैं पीछे। यह है बहुत सहज। परन्तु समझते नहीं हैं बाबा को बन्डर लगता है। एक दिन गणिकायें, भिलनियायें भी आकर समझ जावेंगे और यहां के रह जावेंगे। पिछाड़ी में आके तीखे हो जावेंगे। यह गणिकायें भिलनियायें आद सब सब निकलेंगे। हो सकता है गवर्मेन्ट इन्हों के अड्डे निकलवाये इकट्ठा कर दे। वहां भी कोई अच्छी जायेगी= सम्पर्क कर सकते हैं। बहुतों को तो लज्जा आती है। देखा भी तो बहुत है ना। बाबा तो कहते रहते हैं वेश्याओं को भी उठाना है। यह हैं ही वेश्यालय। भारत का नाम भी इन्हों ने ही गिराया है। इस में मुख्य चाहिए योगबल। यह बिलकुल ही पतित हैं। पावन बनने होने लिए याद की यात्रा चाहिए। अभी वह याद का बल बहुत ही कम है। वेश्याओं को भी आत्मा समझ उठाओ। फिर घृणा नहीं आवेगा। आत्मायें तो सब गिरी हुई है। परन्तु उनके लिए घृणा आती है। यह हैं नम्बरवन पतित। सो फिर नम्बरवन पावन बनना है। कर के यह जन्म अच्छा था परन्तु हैं तो नम्बरवन पतित ना। तो इन गणिकाओं को भी उठाना है। तब ही तुम्हारा नाम बाला होगा। अपन को आत्मा निश्चय कर बोलेंगे कि हम भाई को समझाते हैं। तो फिर घृणा नहीं आवेगा। परन्तु वह अवस्था कुछ है नहीं। अच्छे2 बच्चे

योग में कच्चे हैं। ज्ञान में तीखे हैं। कोई का तो न योग है, न ज्ञान है। जिनमें ज्ञान है वह भी इस योग में कमज़ोर हैं। यही डिफिक्लट सबजेक्ट है। इन में जबपास हो। गणिकाओं का भी उधार तो करना है ना। अच्छी2 माता अनुभवी हो जो जाकर समझाअवे। कन्याओं को तो अनुभव नहीं है। माता समझाये सकेंगी हम भी ऐसे थे। अब बाप कहते हैं पवित्र बनो तो तुम विश्व के मालिक बन जावेंगे। यह दुनिया ही शिवालय बन जावेगी। सतयुग को शिवालय कहा जाता है। वहां अर्थहसुख है। ऐसे नहीं कि वेश्याएं सुधर नहीं सकती है। यह भी आवेंगे। तुम थोड़ा उठाते हो। पर हिम्मत छोड़ देते हो। वेश्याओं के हैड को निमंत्रण देना चाहिए कि सभी को ले आओ। यह भी शिवालय में 21 जन्म ऊंच पद पाने लगती है। यहां तो कितना दुःख है। विषय सागर में गोता खाते रहते हैं। इन्हों के भी ऐसोसियशन होते हैं। उन्हों के बड़ों को समझाना चाहिए। हम खास वेश्याओं के लिए रखते हैं। उन्हों के एसोसियशन तो बहुत है। इनमें भी नम्बरवार होते हैं। कोई तो बड़े शाहूकार, अच्छे मकान होते हैं। तुमको गवर्मेन्ट से सब पता पड़ सकता है। उन्हों को भी तुम समझाओ बाप कहते है अब प्रतिज्ञा करो पवित्र बनने की। तुमको रोटी मिल जावेगी। किसको रोटी पहुंचाना कोई बड़ी बात नहीं। 5-7 निकलेंगे। परन्तु अभी देह अभिमान तोड़ना है। ऐसे पतित को पावन बनाने लिए योग बल की तलवार भी तीखी चाहिए। उसमें शायद अभी देरी है। जैसे गुलज़ार है, स्वदेश है, मोहनी है, अच्छे समझाने वाले हैं। परन्तु इतना उमंग आता थोड़े ही है। वेश्याओं के लिए गवर्मेन्ट से बात करनी चाहिए। समझाने वालों में भी नम्बरवार हैं। नम्बरवार भी सेन्टर्स पर भी रहते हैं। बाप तो जानते हैं ना। सब एक रस नहीं हो सकते। सर्विस पर भी जो जाते हैं उन में भी रात-दिन का फर्क है। तो ~~अभी~~ पहले जब कोई को समझाते हो तो बाप का परिचय देना है। बाप की ही महिमा करो। इतने गुण सिवाय बाप के और कोई में नहीं हैं। वही गुणवान बनाते हैं। बाप ही सतयुग की स्थापना करते हैं। अभी यह है संगम युग। जब कि तुम पुरुषोत्तम बन रहे हो। तुम आत्माओं को बैठ समझाते हो यह तो समझते हो आत्मा का यह शरीर है। कहां तक समझते हैं वह पहचान सिकल से पड़ेगी। कोई मुड़ जाते हैं तो सिकल से ही पता पड़ जाता है। उनके सिकल ही बदल जाते हैं। आत्मा स्वच्छ बैठेंगे तो सिकल शिकल भी अच्छे रहेंगे। यह भी प्रैक्टीस होती है। घर-गृहस्थ में रहने वाले इतना उछल नहीं सकते हैं। क्योंकि गोरख-धंधा लगा पड़ा है। पूरा जब अभ्यास करे तो चलते-फिरते, उठते-बैठते पक्की हो जाये। बाद में ही तुम पावन बनते हो। आत्मा जितना योग में रहती है उतना ही ऊंच बनती है। सतयुग में तुम सब सतोप्रधान थे तो बहुत खुशी थी। फिर दो कला कम होती हैं तो खुशी भी कम। कम होते2 अभी कोई खुशी नहीं रही है। अब फिर चढ़ना भी ऐसे ही है। जितना नज़दीक आते जावेंगे खुशी बढ़ती जावेगी। पिछाड़ी को तुम बहुत खुशी में रहेंगे। हंसते-खेलते रहेंगे। बेहद का बाप मिला है बाकी और क्या चाहिए। बाबा पर तो कुर्बान होना चाहिए। शाहुकार कोई मुश्किल निकलते हैं। गरीबों को ही मिलता है। ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। धीरे-धीरे वृद्धि को पाते रहेंगे। कोटों में कोई ही विजय माला के दाना बनते हैं। बाकी प्रजा तो बननी ही है नम्बरवार। कितने ढेर प्रजा हो जावेंगे। शाहुकार गरीब सभी होंगे। यह पूरी राजधानी स्थापन हो रही है। बाकी सभी अपने2 सेक्शन में चले जावेंगे। तो बाप समझाते हैं बच्चों को देवीगुण भी धारण करने है। कोई के तो आसुरी से भी आसुरी गुण है। अज्ञान काल में भी बाबा को देखा हुआ है बहुत प्यार में शान्ति में सारा घर चलता है। 5 भूत बड़ा तंग करते हैं। लोभ का भी भूत होता है। कोई चीज़ न मिले तो बात मत पूछो। देवीगुणों में तो बड़ा कायदे सिरे खान-पान चलता है। उनको कब यह आश रहेगी क्या किंचन में जाये यह बनाऊं। यह खाऊं। यह आशें अभी यहां हैं। बाबा को कई2 वानप्रस्तियों के आश्रम देखे हुये हैं बड़े ही शान्ति से रहते हैं। यहां तो यह सब बेहद की बातें बाप समझाते रहते हैं। वेश्याएं गणिकाएं भी ऐसे2 आवेंगे जो तुम से भी तीखे हो जावेंगे। बड़ी फर्स्ट क्लास गीत गाने वाली, भाषण करने लग पड़ेंगी। ऐसे फर्स्ट क्लास गीत बनावेंगे जो सुनते ही खुशी का पारा चढ़ जायेगा।

ऐसे गिरे हुये को तुम समझाये उठाओ तु तब तुम्हारा नाम भी बहु ऊंचा होगा। कहेंगे यह तो वेश्याओं को भी इतना ऊंच बनाते हैं। खुद ही कहेंगे हम तो शुद्र थे। अभी ब्राह्मण बने हैं फिर हम सो देवता, क्षत्री, बनेंगे। यहां के पुराने2 बच्चे इतना नहीं समझाये सकेंगे जितना वह समझाये सकेंगी। बाबा हरेक के चलन से समझ तो सकते हैं ना। वह ~~कुछ~~ कुछ उन्नति को पावेंगे वा नहीं। खुद भी समझ सकते हैं। हम इससे जास्ती चढ़ नहीं सकेंगे। पिछाड़ी में आने वाले इन से भी जास्ती चढ़ जावेंगे। वेश्याएं भी पुरुषार्थ कर माला का दाना बन सकती है। क्योंकि बहुत दुःखी है ना। वह ज़ोर से पुरुषार्थ करने लग पड़ेंगी। यहां वालों से जीजे चले जावेंगे। आगे चल तुम यह सब देखना। अभी भी देखते हो नई2 बच्चियां कितनी उछलती हैं सर्विस में। देहली से कमान्डर आया, कितना सब को समझाते हैं खुशी में रहते हैं। बहुत फर्क पड़ जाता है। बाबा तो कहते हैं ट्रेन में भी तुम समझाते रहो। चित्र साथ में ले लो। अभी तो ल०ना० के चित्र भी बन गये हैं। अजन बाबा के पास आई नहीं हैं। आवे तो बाबा लगाके देवे। इन चित्रों पर समझाना बहुत सहज है। यह हैं एक आवजेक्ट। हम फिर से यह बन रहे हैं। अभी हम ब्राह्मण हैं फिर सो हम देवता बन रहे हैं। यह भी समझाये वही सकेंगे जो बन रहे हैं। जिन में कुछ अकल ही नहीं वह कैसे समझाये सकेंगे। इनमें लिखते भी बड़ी फर्स्ट क्लास है। कृष्ण के भक्तों को, ल०ना० के भक्तों को इन चित्रों पर जाकर समझाओ। हैं बहुत सहज। इसलिए बाबा कहते थे कुछ चित्रों का कलेन्डर भी बन जावे तो बहुत अच्छा है। नम्बरवन फर्स्ट क्लास हैं ल०ना० के मंदिर में जावे सर्विस करना। चित्र साथ में ले जावे वहां बैठना चाहिए। हमको बाप द्वारा यह वर्सा मिल रहा है। यह सतयुग में मालिक थे ना। अभी तो कलियुग है। फिर सतयुग होगा। साथ में झाड़-त्रिमूर्ति भी हो। दुकान निकाल बैठ जाना चाहिए। ढेर मनुष्य आकर तुम्हारा सुनते रहेंगे। तुम कितने चित्र वहां बेच सकते हो। तुम्हारा सारा खर्चा इन चित्रों से निकल आवे। चित्रों से फायदा तो होता है ना। तुम्हारे इस वेज में भी बहुत फायदा है। फ्री2 तालाब हो सकता है। सारा दिन बुधि चलती रहती है यह करना चाहिए यह करना चाहिए। करने वाले बहुत कम हैं। कराने की डायरेक्शन तो बाबा बहुत देते रहते हैं। तुम ल०ना० के मंदिर में जावे सर्विस करो। कब कोई तुमको मना नहीं करेंगे। मंदिर के बाहर दुकान निकाल बैठो। बोलो बेहद के बाप से आकर यह ~~वर्सा~~ वर्सा लो। तुम एक को समझावेंगे तो एक दो को देख ढेर अ इकट्ठे हो जावेंगे। बाबा का बम्बई में देखा हुआ है। बाबा ने ~~के~~ देखा पहले एक को बैठ समझाता था। फिर दूसरे दिन देखा तो 4-5 बैठे थे। फिर दूसरे दिन देखा 0-20 हो गये। थोड़े ही दिनों में उनका बड़ा सतसंग बन गया। तुम्हारा ज्ञानतो बहुत भी०ा है। समझाने वाले भी बड़े अच्छे चाहिए। कोई न कोई निकलेंगे जरूर। ~~सुबह~~ सुबह और शाम को यह सर्विस करने लग ~~जाओ~~ जाओ। दिन में तो अपनी नौकरी याद करनी ही है। सर्विस बहुत है। तुम्हारे वेजेज तो नम्बरवन चीज़ है। शार्ट बहुत अच्छा समझाये सकते हैं। बाकी जिनको अकल ही नहीं समझाने का वह वेज पहन कर क्या करेंगे। समझाये सकते हैं तो लगाना चाहिए। भल कोई हंसी करे हर्जा ही क्या है। युक्ति से किसी दुकान पर चले जाओ। फिर पूछेंगे यह क्या है? बैठ समझाओ। दुकान वाले ही तुम पर कुर्बान हो जावेंगे। युक्तियां तो सर्विस करने की बहुत ही ढेर हैं। जो समझ सकते हैं वही बाप के डायरेक्शन पर चलेंगे। नशा भी रहेगा ना। हम सारा दिन यह सर्विस करते हैं। एक मंदिर में दो तीन भी बैठ सर्विस कर सकते हैं। अभी पुरुषार्थ न करेंगे, याद की यात्रा में न रहेंगे तो फिर अटु लेट हो जावेंगे। कुछ भी बुधि में नहीं बैठता है तो गोया आसुरी बुधि हुई ना। बुधि पलटती ही नहीं है। जिन में भूत होते हैं वह सर्विस बदली डिससर्विस की करते रहते हैं। फिर समझाया जाता है तुम्हारा चलन जो है इससे तुम और ही गिर जावेंगे बाप सुनावेंगे भी ब्रह्मा द्वारा ना। ब्रह्मा बिगर किससे सुनावेंगे। फिर मुरली भी बन्द की जाती है। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमोर्निंग। और नमस्ते। ओम।

-: : **************************शिव बाबा याद के हैं क्या? : : -**************************: : -